आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 08-02-2016 ● अंक-428 ● तारीख - 09 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - 1 ● मंगलवार● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

वही सच्चा भक्त है, जो भगवान की खुशी को अपनी खुशी मानता है। वह हमेशा भगवान को खुशी देना चाहता है, उनके लिए किसी असुविधा का कारण बनना नहीं चाहता। यह मानकर चलना चाहिए कि भगवान की खुशी में ही आपकी खुशी है और आपकी खुशी में भगवान की। एकता की इस भावना को आत्मसात कीजिए।

उदयपुर में पासपोर्ट कार्यालय शीघ्र

उदयपुर में संभागीय पासपोर्ट कार्यालय खुलने की प्रक्रिया ने अब रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है।

इसी को लेकर विदेश मंत्रालय के पासपोर्ट विभाग के उच्चाधिकारियों की एक टीम गत दिनों उदयपुर पहुंची, गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने सर्किट हाउस में अधिकारियों की बैठक ली, इस मौके पर महापौर चन्द्रसिंह कोठारी और नगर निगम के अधिकारी भी मौजूद रहे, करीब एक घंटे चली बैठक के बाद पूरी टीम ने गृहमंत्री कटारिया के साथ पासपोर्ट कार्यालय के लिए शहर के पंचवटी इलाके में प्रस्तावित भवन का निरीक्षण किया, टीम के सदस्यों ने भवन का और वहां हुए निर्माण कार्य का जायजा लिया, साथ ही वहां पार्किंग सुविधा को भी देखा।

इस अवसर पर गृहमंत्री कटारिया ने कहा कि विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अपने उदयपुर दौरे के दौरान जयपुर के लिए विमानन सेवा शुरू करने के साथ ही पासपोर्ट कार्यालय को फिर से उदयपुर में खोलने की घोषणा की थी. इसी को लेकर विदेश मंत्रायल की टीम आई है और अगर प्रस्तावित भवन में और भी निर्माण कार्य कराना होगा तो वह भी जल्द करा दिया जाएगा। कटारिया ने कहा कि पासपोर्ट ऑफिस शुरू होने से संभाग के युवाओं और विशेष कर आदिवासी अंचल के लोगों को अधिक लाभ मिलेगा।

अनुरोध

प्रिय पाठकगण,

''मन के जीते जीत सदा'' समाचार पत्र को दिये गए अपार सहयोग हेतु आपका आभार। हमारा प्रयास सदैव पाठकों को तथ्यपूर्ण एवं रूचिकर सामग्री उपलब्ध कराने का रहा है। इसी क्रम में, यदि आप हमें पठनीय सामग्री संबंधी कोई सुझाव देना चाहें, अपनी स्वरचित कहानी/कविता भेजना चाहें अथवा आपके गाँव/ शहर/राज्य से जुड़ी कोई ऐतिहासिक/ धार्मिक/सांस्कृतिक जानकारी समाचार पत्र में प्रकाशित करवाना चाहें तो संपूर्ण जानकारी फोटो सहित हमें डाक से भेजें या ईमेल करें। अपूर्ण, तथ्यहीन जानकारी प्रकाशित नहीं की जाएगी तथा सामग्री प्रकाशित करने अथवा न करने का अधिकार प्रकाशक मण्डल के अधीन है। धन्यवाद।

पता :- ई-डी-71, बप्पा रावल नगर, सेक्टर - 6
हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
ई-मेल :- mankijeet2015@gmail.com

भगवान के मंगला दर्शन की भावना

इस दर्शन की झांकी से पहले श्रीकृष्ण को जगाया जाता है, उसके बाद मंगल भोग (दूध, माखन, मिश्री , बासून्दी, आदि) धराया जाता है। फिर आरती की जाती है। यशोदा मैया परिसेवित श्रीकृष्ण के मंगला दर्शन को इस प्रकार निरूपण किया जाता है जैसे बाल कृष्ण यशोदा मैया की गोद में बिराजमान है। माँ उनके मुख कमल का दर्शन कर रही हैं, मुख चूम रही हैं, नंदबाबा आदि प्रभु को गोद में लेकर लाड़ लड़ा रहे हैं। श्याम–सुन्दर के सखा बाल गोपाल गिरधर गुणों का गान कर रहे हैं, ब्रजगोपियां अपने रसमय कटाक्ष से उनकी सेवा कर रही हैं। नन्दनन्दन कलेवा कर रहे हैं, प्रभु की मंगला आरती हो रही है। प्रभु मिश्री और नवनीत का रसास्वादन कर रहे हैं।

नाथद्वारा के पर्यटन स्थल

हल्दीघाटीः– हल्दीघाटी भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध राजस्थान का वह ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ महाराणा प्रताप ने अपनी मातृभूमि की लाज बचाये रखने के लिए असंख्य युद्ध लड़े और शौर्य का प्रदर्शन किया। हल्दीघाटी राजस्थान के उदयपुर जिले से 27 मील (लगभग 43.2 कि.मी.) उत्तर–पश्चिम एवं नाथद्वारा से 7 मील (लगभग 11.2 कि. मी.) पश्चिम में स्थित है। यहीं सम्राट अकबर की मुगल सेना एवं महाराणा प्रताप तथा उनकी राजपूत सेना में 18 जून, 1576 को भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रताप के साथ कई राजपूत योद्धाओं सहित हकीम खाँ सूर भी उपस्थित था। इस युद्ध में राणा प्रताप का साथ स्थानीय भीलों ने दिया, जो इस युद्ध की मुख्य बात थी। मुगलों की ओर से राजा मानसिंह सेना का नेतृत्व कर रहे थे।

लालबागः– लालबाग श्री नाथद्वारा में एक बहुत ही सुंदर बगीचा है। अब यह आधुनिक तकनीक के साथ विकसित किया गया है और बहुत अच्छा लग रहा है। इसका प्रवेश निः शुल्क था, लेकिन अब इसका प्रवेश शुल्क 5 रुपये है। यहाँ श्रीनाथजी की चीजों का संग्रहालय है। संग्रहालय में श्रीनाथजी के पुराने वाहन और उनका इतिहास है। लालबाग हर किसी के लिए आराम और शांति की एक जगह है।

विट्ठल नाथ जीः– श्रीनाथजी मंदिर के दाईं ओर तथा नक्कारखाना गेट के विपरीत विट्ठल नाथ जी मंदिर के नाम से एक मंदिर है।

द्वारिकाधीश जीः– द्वारिकाधीश जी मंदिर कांकरोली में स्थित है। यह श्री नाथद्वारा से लगभग 15 किमी दूर है। यह श्री नाथद्वारा से उत्तर की तरफ स्थित है। वहां जाने के लिए एक चार लेन का राजमार्ग है।

कुम्भलगढ़ः– कुम्भलगढ़ एक किला है। यह पश्चिम और श्री नाथद्वारा से लगभग 50 किमी की दूरी पर है। कुम्भलगढ़ को एक बड़ी और मोटी दीवार से कवर किया गया है। यह दुनिया की दूसरी सबसे लंबी दीवार है। कुम्भलगढ़ में एक महान शिव मंदिर है।

गणेशटेकरीः– गणेशटेकरी में भगवान गणेश जी का एक मंदिर है तथा एक फैला हुआ बगीचा है। यह एक छोटे से पहाड़ की चोटी पर है। यह एक बहुत अच्छी जगह है।

गौशालाः– श्री नाथद्वारा में कई गौशाला है। श्रीनाथजी की गौशाला में सैकड़ों गायें रहती है। उनमें से एक नाथूवास गौशाला है।

नंदसमंद बांधः– नंदसमंद बांध भ्रमण के लिए एक शांत जगह है। यह बरसात के मौसम में पानी से पूरा भर जाता है। लोग इसके पानी में स्नान करना पसंद करते है । नंदसमंद बांध आकार और पानी की क्षमता में काफी बड़ा है। इसके अलावा, यहाँ एक छोटा सा बगीचा है।

श्लोक

भाडेव तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन।
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः।।

●●●●

अर्थः–मनुष्य को कभी भी सत्य, दान, कर्मण्यता, अनसूया (गुणों में दोष दिखाने की प्रवृत्तिका अभाव), क्षमा तथा धैर्य – इन छः गुणों का त्याग नहीं करना चाहिए।

षण्णामात्मनि नित्यानामैश्वर्यं योधिगच्छति।
न स पापैः कुतो नर्थैर्युज्यते विजेतेंद्रियः।।

●●●●

अर्थः–मन में नित्य रहने वाले छः शत्रु – काम, क्रोध, लोभ , मोह , मद तथा मात्सर्य को जो वश में कर लेता है वह जितेन्द्रिय पुरुष पापों से ही लिप्त नहीं होता, फिर उनसे उत्पन्न होने वाले अनर्थों की बात ही क्या है।

●●●●

मानव मन के बोल

वो तीन दिन लोहिया जी के साथ...

"हार नहीं मानूंगा रार नहीं ठानूंगा
रार नहीं ठानूंगा।"

बोले हारना नहीं। आपका आशीर्वाद मिल गया। हारने के लिए पैदा ही नहीं हुए। अच्छे कार्यों के लिए पैदा हुए। जब दीनदुःखी की चित्कार नहीं सुनते तो हारते। जब किसी बच्चे की किलकारी नहीं सुनते, उसके कष्ट देखकर आगे नहीं बढ़ते तो हारते। बाबू मैंने अभी आपको थोड़ी देर पहले ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सा. की बात कही।

उस दृश्य को देखकर उदयपुर की कोटड़ा तहसील सब से गरीब तहसील, कोटड़ा तहसील का एक गाँव बेकरिया, वहाँ जब ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब ने पधार करके नारायण सेवा संस्थान के शिविर में 4 विकलांग भाइयों को कैलिपर्स पहना कर आशीर्वाद दिया एवं इसका शुभारंभ करने की प्लानिंग बनी। मैं चार दिन से वहीं था। कुछ साथी जगदीश जी, प्रशान्त जी, कल्पना जी, कमला जी, देवेन्द्र जी और भी कई साथी, वहीं लंगर लगाया, चुल्हा गैस ले गये। सब सामान ले गये। वहीं सोना, प्रातःकाल उठकर सब को चाय पिलाना।

एक दिन पहले राष्ट्रपति जी के पधारने के एक दिन पहले, एक किन्ही ने रोड पर एक अपना टेंट लगा लिया था। माननीय कलेक्टर साहब उधर से आये। किसने ये टेन्ट लगाया, परमीशन ली नहीं! बोले साहब, हमें परमीशन की जरूरत क्या ? हमारे यहाँ रूकवायेंगे राष्ट्रपति जी को और हम मिलेंगे उनसे। उन्होंने कहा ऐसा नहीं होता है। बीच में ट्राफिक की दिक्कत होगी। उनको कहा आप विधिवत कुछ कीजिए। ऐसा तो नहीं करने देंगे। उन्होंने कहा साहब हम तो ऐसा ही करेगें। तो कलेक्टर साहब को गुस्सा आया। उन्होंने कहा इनका टेन्ट हटा दीजिए।

क्रमश अगले अंक में ...

(श्री वल्लभाचार्य जयन्ती पर विशेष) नाथद्वारा के नाम से दुनियाभर में विख्यात हो गया – सिंहाड़ ग्राम

बाल मनोहारी सिद्धांतों में ब्रह्म, जीव, जगत, माया, आविर्भाव–तीरोभाव तथा ब्रह्म संबंधों की जानकारियां प्रदान कराने वाले वल्लभाचार्य अरावली की श्रेणियों के बीच उदयपुर राजस्थान से 50 किलोमीटर दूर विक्रम संवत् 1564 में श्रीनाथ मुख्य पीठ के रूप में स्थापित किया। श्री वल्लभाचार्य ने श्रीनाथ मंदिर की स्थापना से पहले संपूर्ण पृथ्वी की न केवल परिक्रमा की अपितु भारतभर में चौरासी बैठकों द्वारा चौरासी शिष्यगणों को मनोनीत किया। वर्षभर में सृष्टि आरंभ दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत्सर उत्सव, गणगौर, वैशाख कृष्ण एकादशी, अक्षय तृतीया, नरसिंह जयंती, स्नान यात्रा, वृत यात्रा, श्रावण शुक्ल एकादशी, पवित्रा एकादशी, जन्माष्टमी, नंद महोत्सव, दशहरा, शरद पूर्णिमा, दीपमालिका, अन्नकूट, यम द्वितीया, गोपाष्टमी, प्रबोधिनी एकादशी, डोलोत्सव के अलावा हवेली संगीत, फागुन के रास–रंग उत्सव, दुनियाभर में ख्याति लिए हैं।

आचार्यश्री ने श्री गोवर्धननाथ की बाल सेवा की परिपाटी को महत्व दिया और श्रीनाथ के नाम से उसे प्रसिद्ध किया। उस समय देश में आक्रांताओं के उत्पात चरम की ओर बढ़ रहे थे। ब्रज मंडल उत्तर प्रदेश न केवल घिर गया था, अपितु श्री विग्रह का मंदिर भी ध्वस्त कर दिया गया था। ऐसे में प्रभु वल्लभाचार्य ने श्री विग्रह को सुरक्षित स्थान पर ले जाना उपयुक्त समझा।

विक्रम संवत् 1726 आश्विन पूर्णिमा की रात के पिछले प्रहर में श्री वल्लभाचार्य ने एकमात्र अपने आराधक श्रीनाथजी को लेकर रथ में सवार होकर ब्रज में प्रस्थान किया। वे लक्ष्य विहीन यात्रा पर चल पड़े। ब्रज से आगरा पहुंचे, वहां से ग्वालियर, कोटा, पुष्कर, कृष्णगढ़, पीतांबरजी, जोधपुर चौपासनी से मेवाड़ राज्य के सिंहाड़ पहुंचकर स्थाई रूप से उन्हें प्रतिष्ठित किया गया। उस समय मेवाड़ के महाराणा राजसिंह सर्वाधिक शक्तिशाली शासकों में थे। संवत् 1728 फाल्गुन कृष्ण सप्तमी शनिवार को सिंहाड़ में ही उनका पाटोत्सव किया गया। वह सिंहाड़ ग्राम नाथद्वारा के नाम से दुनियाभर में विख्यात हो गया।

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में आचार्य वल्लभ का स्थान व योगदान कालजयी है। उन्होंने पुष्टिमार्ग का प्रवर्तन कर जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास किया। उन्होंने जिस कृष्ण भक्ति को प्रतिपादित किया, आज उसका प्रचार समूचे भारत में है। विशेषकर पूरे उत्तर भारत में उनके लाखों अनुयायी हैं। यही कारण है कि उन्हें श्रद्धा के साथ महाप्रभु वल्लभ भी कहा जाता है। वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को उनका प्राकट्य दिवस मनाया जाता है।

सम्पादकीय

एक व्यक्ति अपने चार बच्चों को अनाथ छोड़कर रात्रि में घर से भाग निकला, आत्म कल्याण के लिए किसी संत के पास जाकर वह भगवत् प्राप्ति का उपाय पूछने लगा। उस व्यक्ति ने अपने त्याग की कहानी सुनाते हुए कहा– "मेरी पत्नी उस समय सो रही थी, एकाएक बच्चा चीखा तो मुझे लगा, अब पत्नी जाग पड़ेगी और मेरा घर से निकलना कठिन हो जायेगा, पर पत्नी ने बच्चे को छाती से लगाया और बच्चा चुप हो गया। मैं चुपचाप निकल आया.... महात्मन्! अब संसार की मोह–माया में फँसना नहीं चाहता।"
साधु बोले–"मूर्ख! दो भगवान तो तेरे घर में ही बैठे है। जिन्हें तू छोड़ आया। जा, जब तक तू उनकी सेवा नहीं करेगा। तब तक तेरा उद्धार नहीं होगा। पहले परिवार को संभाल, अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर फिर सोचना कि पारिवारिक दायित्वों को निर्वाह करते हुए तेरा आत्म कल्याण का लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं? आध्यात्म भगोड़ों का नहीं शूरवीरों का साथ देता है। परिवार में रहते हुए भी, तेरी साधना पूरी होती रह सकती है। त्याग करना ही है, तो अपने सुखों एवं सुविधाओं का कर।"
यदि तू अपने पास जो धन लक्ष्मी सेवा के साधन और सद्भावनों के विचार असहायों, दीन–दुःखियों और गरीबों के लिए बांट देगा, तो स्वतः कल्याण के निकट पहुँच जायेगा। महात्मा का दिया हुआ मूल मंत्र उस व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य बन गया और मानव के रूप में महामानव बनकर जन–जन का चहेता बन गया।
भारतीय संस्कृति में समस्त पृथ्वी को अपने परिवार के रूप में माना गया है, और जी हाँ, हम तो पुनर्जन्म को भी मानते है? और यदि हाँ, तो इस बात को नहीं नकारा जा सकता कि जगत् के प्राणियों से हमारा कोई रिश्ता नहीं। कोई न कोई किसी न किसी जन्म में तो हमारा संबंधी रहा होगा, यही मानकर भी सेवा को धारण कर सकते हैं–हम यदि हमें इस बात का एहसास हो जाता है कि हम जो दवाई काम में ले रहे हैं, उसकी एक्सपाईरी तारीख नजदीक आ रही है तो तत्काल उसका सदुपयोग कर खत्म कर देते हैं। हमारा जीवन भी एक औषधि है दर्दियों के लिए। जिसकी एक्सपायर दिनांक निश्चित तो है, पर अघोषित। इससे पहले जीवन रूपी औषधि एक्सपायर हो जावे हमें अपने जीवन को लगा देना चाहिए दीन, दुःखियों, असहायों, विकलांगों और अभावग्रस्तों की सेवा में।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर द्वारा आयोजित 'निःशुल्क' निःशक्तजन एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

गुरु वह है, जो हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाए

शास्त्र कहते हैं कि गुरु वह है, जो हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाए। जो हमें रोशनी प्रदान करे। तो सबसे पहले ऐसा कौन करता है? सबसे पहले यह रोशनी हमें माँ दिखाती है। उसके बाद पिता। वही हमारे प्रथम गुरु हैं। इसीलिए शास्त्रों में यह भी लिखा है कि माता–पिता का यथायोग्य सम्मान करना चाहिए। जरा सोचो कि अगर हमें हमारे माता–पिता द्वारा कुछ भी सिखाया न जाता तो हमारी क्या स्थिति होती। क्या हम ढंग से चल पाते, बात कर पाते, लिख पाते, व्यवसाय कर पाते! यहाँ तक कि हम अपने जीवन और इस शरीर की रक्षा कैसे करनी है, यह भी नहीं जान पाते। मान–अपमान, प्यार और अहंकार जैसी मूल वृत्तियों को पहचानना भी हमें वही सिखाते हैं।
लेकिन जब हम यौवन और सामंर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं, तब अपने उन्हीं माता–पिता को हम तिरस्कार की निगाहों से देखते हैं। कई महानुभाव तो यह भी सोचते हैं कि अब हमें इनकी क्या आवश्यकता है। बूढ़े माता–पिता यदि किसी कारणवश अस्वस्थ हो जाएं तो वे हमें बोझ लगने लगते हैं। तब हमें यह बात याद भी नहीं रहती कि बचपन में हमारे बीमार होने पर कैसे वे रात–रात जाग कर माथे पर पट्टी करते थे। आजकल बहुत सारे गुरु और सद्गुरु हो गए हैं। उन्होंने माता–पिता की गुरुता की ओर से हमारा ध्यान हटा दिया है।
हम माता–पिता के ही चरणों में बैठे रहेंगे तो उनकी कीर्ति कैसे फैलेगी। इसलिए वे परमात्मा से मिलाने और जीवन का सच्चा ज्ञान दिलाने वाले सद्गुरु का महत्व बता कर असल में अपने महत्व की ओर ध्यान खींचने की कोशिश करते हैं। यहाँ पर यह मत समझो कि हमें जीवित रखना हमारे माता–पिता का अपना स्वार्थ था, उनकी मजबूरी थी। नहीं, यह उनका प्रेम था हमारे प्रति। जैसे उनके माता पिता ने उन्हें प्रेम किया था, वैसे ही वे हम पर प्रेम उंडेलते हैं। तो यह दूसरे गुरुओं के लिए भी एक सीख है, उदाहरण है।
जो सच्चा गुरु है वह भी अपने शिष्य को संतान के ही समान प्यार करता है, उसे जीवन की रोशनी दिखाने के लिए उसी तरह रात–दिन सिरहाने बैठा रह सकता है।
भगवान प्रसन्न होते हैं आपसे, अगर आप अपने माता–पिता की बात मानें, उनकी सेवा करें। भगवान को सबका पिता कहा गया है। लेकिन अगर आप जागतिक माता–पिता को प्रसन्न नहीं कर पाएंगे तो आध्यात्मिक पिता अर्थात भगवान को कैसे प्रसन्न कर पाएंगे? यदि आप माता–पिता को आप प्रसन्न नहीं कर पाते तो कोई गुरु–सद्गुरु आपको सन्मार्ग पर नहीं ले जा सकता। अगर वे प्रसन्न नहीं हैं तो भगवान भी प्रसन्न नहीं होंगे। धर्मराज युधिष्ठिर ने महाभारत के युद्ध से पहले विपक्ष में खड़े अपने सभी सम्माननीय जनों को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद लिया था। भगवान राम ने भी वनवास पर जाने से पहले माता कैकयी, माता सुमित्रा, माता कौशल्या से आशीर्वाद लिया था। लेकिन माता–पिता का आशीर्वाद तभी फलता है, जब उसे पूर्ण श्रद्धा से लिया जाए। ढोंग से कुछ नहीं होगा, बात बिगड़ेगी ही। स्मरण रखिए पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किन्तु माता–पिता कुमाता–कुपिता नहीं हो सकते।

प्रतिभा के धनी राजा राम मोहन राय

प्रतिभा के धनी राजा राम मोहन राय बहुभाषाविद् थे। उन्हें बंगला, फारसी, अरबी, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, ग्रीक, फ्रैन्च, लेटिन आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। इन भाषाओं में वे अपने भावों को कुशलता से अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते थे। वैष्णव भक्त परिवार के होने के बावजूद राजा राम मोहन राय की आस्था अन्य धर्मों में भी थी। वेद एवं उपनिषदों में प्रतिपादित एकेश्वरवाद में आस्था रखने वाले राजा जी ने इस्लाम धर्म का गहन अध्ययन किया । मूर्ति पूजा में उनकी आस्था नहीं थी। एक अंग्रेजी पत्र में लिखा था कि राजा राम मोहन राय को गवर्नर जनरल बना देना चाहिये क्योंकि वे न हिन्दू हैं, न मुसलमान और न ईसाई। ऐसी स्थिति में वे निष्पक्षता से गवर्नर जनरल का कार्यभार संभाल सकते हैं। ये कहना अतिशयोक्ति न होगी कि राजा राम मोहन राय केवल हिन्दू पुनरुत्थान के प्रतीक नहीं थे, अपितु सच्चे अर्थ में वे धर्म निरपेक्षता वादी थे। 1802 में उन्होंने एकेश्वरवाद के समर्थन में फारसी भाषा में "टुफरवुल मुवादिन" नामक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक की भूमिका उन्होंने अरबी भाषा में लिखी। 1816 में उनकी पुस्तक "वेदान्त सार" का प्रकाशन हुआ जिसके माध्यम से उन्होंने ईश्वरवाद और कर्म–काण्ड की घोर आलोचना की। जीविकोपार्जन हेतु रंगपुर में ईस्ट इण्डिया के अधीन नौकरी की और बाद में रंगपुर की कलक्टरी में दीवान बन गये। 1815 में आत्मीय सभा तथा 1819 में कलकत्ता युनेटेरियन कमेटी की स्थापना आपके द्वारा की गई। मध्य युगीन दलदल में फंसे इस देश में आपने वो जान फूंकी जिससे भारतीय चिन्तन तथा जीवन की धारा ही बदल गई। अपनी प्रचार प्रतिभा और मानव सेवा की अपूर्ण भावना के साथ तथा विवेक पूर्ण और विश्व जनीय दृष्टि से राजा राम मोहन राय भारत में पुनर्जागरण तथा धर्म सुधार दोनों को एक साथ लाने में सफल हुए। 20 अगस्त 1828 को ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज ईश्वर को निराकार मानता है। सदाचार, दया भाव, निर्भयता और प्रेम की शिक्षा देना ब्रह्म समाज का उद्देश्य है। प्रसिद्ध इतिहासकार मैक्स मूलर ने ब्रह्म समाज के विषय में कहा था कि यदि भारत में कभी भी कोई नया धर्म होगा तो मुझे विश्वास है कि वह अपने जीवन संचार के लिये राम मोहन राय, योग शिष्य देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा केशव चन्द्र के विशाल हृदय का ऋणी रहेगा। राजा राम मोहन राय सती प्रथा को अमानुषिक मानते थे। उनके अनुसार सह मरण का सिद्धान्त शास्त्र के अनुसार सत्य नहीं है अपितु ये सोच विकृत कुसंस्कार है। आपके प्रयासों का ही परिणाम है कि लॉर्ड बैंटिक ने 4 दिसम्बर 1829 को एक आदेश जारी किया जिसके तहत सती प्रथा पर रोक लगाई गई।

आईये जानें – 108 का महत्व

एक प्राचीन भारतीय खगोलग्रंथ, सूर्य सिद्धांत के अनुसार, सूर्य की रोशनी 0.5 निमिष में 2,202 योजन की दूरी तय करती है। एक योजन नौ मील के बराबर होता है। 2,202 योजन का मतलब है, 19,818 मील। एक निमिष एक सेकेंड के 16/75 के बराबर होता है। आधा निमिष एक सेकेंड का 8/75 वां हिस्सा है, जिसका अर्थ है 0.106666 सेकेंड। 0.106666 सेकेंड में 19,818 मील की गति का मतलब है, 185,793 मील प्रति सेकेंड। यह आधुनिक गणना के आस–पास ही है, जिसके मुताबिक प्रकाश की गति 186,282 मील प्रति सेकेंड है। आधुनिक विज्ञान बहुत मुश्किल से और तमाम तरह के उपकरणों की मदद से इस संख्या पर पहुंचा है। जबकि कुछ हजार साल पहले, महापुरूषों ने बस यह देखकर इस संख्या का पता लगा लिया था कि इंसानी प्रणाली और सौर प्रणाली एक साथ कैसे काम करते हैं।
सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी, चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी, यह ग्रह जिस तरह घूमता है और उसका जो असर पड़ता है, इन सभी चीजों पर बहुत ध्यान दिया गया था। इसका लक्ष्य आपको यह बताना है कि समय कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका हमने आविष्कार किया है समय की जड़ें प्रणाली से, हमारी रचना से गहराई से जुड़ी हैं। सूर्य के व्यास (डायमीटर) का 108 गुना, सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी के बराबर है। पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी चंद्रमा के व्यास का 108 गुना है। सूर्य का व्यास पृथ्वी के व्यास का 108 गुना है। इसी वजह से माला में 108 मनके होते हैं।
आप जानते हैं कि पृथ्वी लगभग गोल है और उसका कक्ष यानी ऑर्बिट थोड़ा सा झुका हुआ है। चलते हुए और घूमते हुए, वह एक वृत्त बनाती है। आज हम जानते हैं कि इस चक्र को पूरा करने में 25,920 साल लगते हैं। यह झुकाव मुख्य रूप से धरती की ओर चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के कारण होता है। इतने सालों का एक युग–चक्र होता है। हर चक्र में आठ युग होते हैं।

पाँच रसों से पूर्ण है– हरड़

हरड़ बेहद उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि है। इसके पेड़ पूरे भारत में पाये जाते हैं। इसका रंग काला व पीला होता है तथा इसका स्वाद खट्टा,मीठा और कसैला होता है। आयुर्वेदिक मतानुसार हरड़ में पाँचों रस –मधुर ,तीखा ,कड्डुवा,कसैला और अम्ल पाये जाते हैं। आयुर्वेद की चरक संहिता में जिस प्रथम औषधि के बारे में बताया गया है वह हरड़, हर्रे या हरीतकी है। हरड़ की उपयोगिता के बारे मे शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर में माता नहीं है, उसकी माता हरीतकी है। माता फिर भी कभी कुपित (गुस्सा) हो सकती है लेकिन हरड़ पेट में जाने पर कोई अहित नहीं करती बल्कि हमेशा फायदा ही करती है। घरेलू रूप में छोटी हरड़ का ही अधिकतर उपयोग किया जाता है। हरीतकी संपूर्ण शरीर के लिए फायदेमंद है विशेष रूप से कब्ज, बवासीर, पेट के कीड़ों को दूर करने, नेत्र ज्योति व भूख बढ़ाने, पाचन तथा अलग–अलग मौसम में होने वाले रोगों में भी ये प्रभावी होती है।

1 हरड़ के टुकड़ों को चबाकर खाने से भूख बढ़ती है।
2 छोटी हरड़ को पानी में घिसकर छालों पर प्रतिदिन तीन बार लगाने से मुहं के छाले नष्ट हो जाते हैं। इसको आप रात को भोजन के बाद भी चूस सकते हैं।
3 छोटी हरड़ को पानी में भिगो दें। रात को खाना खाने के बाद चबा चबा कर खाने से पेट साफ हो जाता है और गैस कम हो जाती है।
4 कच्चे हरड़ के फलों को पीसकर चटनी बना लें। एक –एक चम्मच की मात्रा में तीन बार इस चटनी के सेवन से पतले दस्त बंद हो जाते हैं।
5 हरड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में दो किशमिश के साथ लेने से एसीडिटी ठीक हो जाती है।
6 हरीतकी चूर्ण सुबह शाम काले नमक के साथ खाने से कफ खत्म हो जाता है।
7 हरड़ को पीसकर उसमे शहद मिलाकर चाटने से उल्टी आनी बंद हो जाती है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़